कवि का समाज

(एक आदर्श समाज की कल्पना)

मैं सुखी गृहस्थों के शान्तिमय चक्की चूल्हों से भरा पूरा एक ऐसा समाज देख रहा हूँ, जो पृथ्वी तल पर सबसे अग्रगामी है।

मैं एक ऐसा समाज देख रहा हूँ, जिसमें दासत्व का अस्तित्व नहीं है; जिसमें प्रत्येक मनुष्य स्वाधीनता और आनन्द के साथ विचरण कर रहा है; जहाँ विज्ञान के द्वारा प्राकृतिक शक्तियां बांध ली गई हैं; ज्योति और विद्युत, वायु और तरंग, सर्दी, और गर्मी एवं पृथ्वी तथा वायुमण्डल की सभी सूक्ष्म और गुप्त शक्तियां मनुष्य जाति की आज्ञाधारक दासियां बन गई हैं।

मैं एक ऐसा समाज देख रहा हूँ, जिसमें स्वर्णमय सिंहासन चकनाचूर पड़े हुए हैं और अत्याचारी तथा निरंकुश शासक ख़ाक में मिल गये हैं। मैं देखता हूँ कि आलस्यमय सत्तावाद संसार से उठ चुका है।

मैं सभी प्रकार की कलाओं से सजा हुआ एक सुखमय समाज देख रहा हूँ जिसका वायुमण्डल संगीत की असंख्य रागिनियों से गूँज रहा है, प्रत्येक मनुष्य के ओष्ठों पर सत्य और प्रेम से सने शब्द केलि कर रहे हैं। मेरा संसार निर्वासन की आहों से और कारागार के शोकजनित उद्‌गारों से अनभिज्ञ है। मेरे संसार में फांसी की छाया नहीं पड़ती। इस जगत् में श्रम अपने वांच्छित